Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh.

Date - Class - V
Subject - Hindi Literature Page - 1
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग - 5
पाठ - 13 वसंत
कवि - आरसी प्रसाद सिंह

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

यह पाठ - 13 कक्षा पाँचवी की हिन्दी साहित्य का है। बच्चो! आज के इस पाठ में हम पाठ - 13 कविता वसंत का अगला भाग पढ़ेंगे।

बच्चो! कविता के पिछले भाग में हमने पढ़ा था कि कवि वसंत ऋतु के बारे में बात कर रहे हैं और वह वसंत के फूलों से पूछ रहे हैं कि तुम इतने सुंदर कैसे हो। तब फूल कहते हैं कि हमें यह सुंदरता ब्रह्मा जी ने दी है, जिससे हम सबको खुश करते हैं। इसके बाद वह वसंत ऋतु के पेड़ों से पूछते हैं कि तुम इतने शीतल कैसे हो? तब पेड़ कहते हैं कि हम मिट्टी से शीतलता लेते हैं और लोगों को अपने पके फल और घनी छाया देते हैं।

बच्चो अब हम कविता की आगे की पंक्तियाँ पढ़ेंगे।

मैंने वसंत की लतिका से
पूछा - तुम हो कितनी कोमल?
वह बोली - हाँ, बढ़ती जाती,
मैं अपने पथ पर हूँ प्रतिपल।

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date- Class - V
Subject - Hindi Literature Page - 2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

संबल का ज्ञान नहीं मुझको
निज दुर्बलता का ध्यान नहीं।
मैंने सीखा है झुकना बस,
मुझमें छवि का अभिमान नहीं।

बच्चो! सबसे पहले हम इन पंक्तियों में आए कठिन शब्दों के बारे में जान लेते हैं।

शब्द	अर्थ
लतिका	छोटी बेल (जैसे अँगूर की बेल)
पथ	रास्ता
प्रतिपल	हर क्षण
संबल	सहारा
निज	अपना
छवि	रंग-रूप
अभिमान	घमंड

भावार्थ :- बच्चो! कविता की इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि मैंने वसंत ऋतु में आने वाली छोटी-छोटी वेलों से पूछा कि तुम इतनी कोमल कैसे हो? तब उन बेलों ने कहा हाँ! हम अपने रास्ते पर हर पल आगे बढ़ते हैं। मुझे यह ज्ञान नहीं है अर्थात् मैं यह नहीं सोचती कि मैं दुर्बल हूँ या मुझे ऊपर उठने के लिए सहारा चाहिए। मैंने केवल झुकना सीखा है, मुझ में अपने रंग रूप अर्थात् सुंदरता को लेकर कोई अभिमान नहीं है।

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date- Class- V
Subject - Hindi Literature Page- 3
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

मैंने वसंत के विहगों से,
पूछा - तुम कितने हो चंचल ?
वे बोले - हम गाते रहते,
आनंद - गीत प्रतिक्षण, प्रतिपल ।
वन - उपवन में भरते रहते,
अपना कल - गान विकल कूजन ।
हम में नव - जीवन का स्वर है,
हम में है भरा नवल - यौवन ।

शब्द अर्थ

विहगों - पक्षी
कल - गान - पक्षियों की चहचहाहट
विकल कूजन - व्याकुल स्वर
नव - जीवन - नया जीवन

भावार्थ :- इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि जब मैंने वसंत ऋतु के पक्षियों से पूछा कि तुम इतने चंचल कैसे हो ? तब उन पक्षियों ने कहा कि हम हर समय मधुर गीत गाते रहते हैं । हम हर समय बगीचों और जंगल में अपनी चहचहाहट मचाते रहते हैं । कभी - कभी हम व्याकुल स्वर में भी गाते हैं । हममें जीवन के प्रति नया स्वर है, हममें नया यौवन भरा है ।

बच्चो ! कवि आरसी प्रसाद सिंह जी हमें इस कविता के माध्यम से समझा रहे हैं कि हमें फूलों की भाँति अपने रंगों और अपनी

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date- Class - V
Subject- Hindi Literature Page-4
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

खुशबू से दूसरों को खुशी देनी चाहिए। हमें पेड़ो की तरह दूसरों की सहायता करनी चाहिए और कभी भी अपनी दुर्बलता को न देखकर सदैव आगे बढ़ने की शिक्षा हमें लतिका से लेनी चाहिए। इसके साथ पक्षियों से हमें जीवन के प्रति नया उत्साह रखने की शिक्षा लेनी चाहिए।

गृह कार्य :-

- बच्चो! आप इस कविता को अच्छे से समझने के लिए दो से तीन बार पढ़ेंगे।
- आप इस कविता 'वसंत' के पृष्ठ - 106 पर आए संक्षेप में के प्रश्न करने की कोशिश करेंगे।

धन्यवाद।

Last page

Scanned with CamScanner